ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

अंक : 16 जनवरी-जून 2023

पीयर रिव्यूड पत्रिका

हिन्दी उपन्यास-2 : 2001-2022

संरक्षक

के.जी. प्रभाकरन

प्रबन्ध संपादक

वी.जी. गोपालकृष्णन

संपादक

पी. रवि

सह संपादक

के.एम. जयकृष्णन

पी. गीता

सलाहकार समिति

रवि भूषण (राँची)

विनोद शाही (जालंधर)

वि. कृष्णा (हैदराबाद)

देवेन्द्र चौबे (नई दिल्ली)

विनोद तिवारी (नई दिल्ली)

अनुक्रम

	संपादकीय		
1.	नैतिक निस्संगता और आंतरिक भुरभुरापन से मुल्क के ईंधन बन जाने की त्रासद कथा (*ईंधन* : स्वयं प्रकाश)	प्रफुल्ल कोलख्य	09
2.	समय की पड़ताल और *काशी का अस्सी* (*काशी का अस्सी* : काशीनाथ सिंह)	नीलाभ कुमार	22
3.	लोकतंत्र के क्षरण की त्रयी (*कैसी आगी लगाई* : असगर वजाहत)	निम्मी ए. ए.	30
4.	फाँस की राजनीति (*फाँस* : संजीव)	हेमा जी.	40
5.	शोषण युक्त संस्कृति और समाज का तर्पण (शिवमूर्ति : तर्पण)	प्रियदर्शिनी	46
6.	कश्मीरियत के दर्द की दास्तान (*कथा सतीसर* : चन्द्रकांता)	षीना ईप्पन	53
7.	सत्ता का ध्वंसराग, नक्सलवाद और बस्तर का आदिवासी (*बस्तर–बस्तर* : लोकबाबू)	वीरेन्द्र मोहन	59
8.	भ्रष्ट के राजनीति के विरुद्ध बुलंद आवाज़ (*मुठभेड़* : शैलेश मटियानी)	षनिल के. पी.	79
9.	जहालत से ग्रस्त जनता को जाग्रत करने की कामना (*अर्दली* : हरपाल सिंह अरुष)	कण्णन के. यू.	82
10.	*अकाल संध्या* और भारतीय समाज (*अकाल संध्या* : रामधारी सिंह दिवाकर)	सुरेश कुमार निराला	93
11.	आज की दुपहरी और चाय का दूसरा कप (*चाय का दूसरा कप* : ज्ञान प्रकाश विवेक)	रामप्रसाद रजबर	101
12.	आज की दुपहरी और पाथरटीला संग–साथ (*पाथरटीला* : रूपसिंह चंदेल)	रामप्रसाद रजबर	110
13.	कुदरत की झांकी और ईश्वर के बीज (*ईश्वर के बीज* : विनोद शाही)	अंबिली विश्वनाथन	118
14.	दलित स्त्री विमर्श की माँग करती कथा (*वह लड़की* : सुशीला टाकभौरे)	कविता राज एन.	124

15.	कागज़ की नाव को हकीकत की नाव बनाने की आकांक्षा (*कागज़ की नाव* : नासिरा शर्मा)	शहला के. पी.	133
16.	हमारे समय का दारुण सच (*गूंगी रुलाई का कोरस* : रणेन्द्र)	वीरपाल सिंह यादव	140
17.	राम और काम के बीच असंतुलन में स्त्री जीवन की त्रासद कथा (*सेज पर संस्कृत* : मधु कांकरिया)	वीरेन्द्र प्रताप	146
18.	अवसरवादी राजनीति की दास्तान (*हलफनामा* : राजू शर्मा)	आर्या ई. आर.	162
19.	मीडिया और सामाजिक जीवन के विविध दृश्य (*ज़िन्दगी लाइव* : प्रियदर्शन)	षिबी सी.	167
20.	बर्बर तम से जूझती–टूटती मनुष्यता की महागाथा (*अस्थिफूल* : अल्पना मिश्र)	प्रियम अंकित	177
21.	आत्मनिर्भर एवं स्वाधीन स्त्री की खोज (*मोबाइल* : क्षमा शर्मा)	षेमिनास टि. एस.	182
22.	किसान जीवन की महागाथा (*अकाल में उत्सव* : पंकज सुबीर)	प्रज्ञा	189
23.	पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से मुक्ति की आकांक्षा (*प्रार्थना में पहाड़* : भालचन्द्र जोशी)	एकता मंडल	196
24.	राजनीतिक पटल पर मानवाधिकार के प्रश्न (*एक और दुनिया होती* : शिवदयाल)	राजेश कुमार	209
25.	यथार्थ को रेखांकित करने का अथक प्रयास (*और सिर्फ तितली* : प्रदीप सौरभ)	रंजित रविशैलम	217
26.	किन्नर जीवन गाथा (*किन्नर कथा* : महेन्द्र भीष्म)	इंदु के. वी.	223
27.	हमारे समय का देशकाल (*राजा जंगल और काला चांद* : तरुण भटनागर)	निशांत	230
28.	साझी संस्कृति और इतिहास में ओझल स्त्री (*बिसात पर जुगनू* : वंदना राग)	विनीजा विजयन	242
29.	समाज का बंद घेरा बहुत मज़बूत होता है (*लौटना नहीं* : कैलाश बनवासी)	विनोद तिवारी	251
30.	बांग्लादेश के अभ्युदय की महागाथा (*मैं बोरिशाइल्ला* : महुआ माजी)	भीमसिंह	261

31.	दिल्ली की कपडा मिलों और मज़दूर बस्तियों का सच (*धर्मपुर लॉज* : प्रज्ञा)	अरुण होता	273
32.	सांस्कृतिक अवनति को चिह्नित करती औपन्यासिक दस्तावेज (*वैकल्पिक गल्प* : चंदन पांडेय)	प्रणीता पी.	278
33.	कुछ नोट्स कथा कहती है (*एक कस्बे का नोट्स* : नीलेश रघुवंशी)	विजयकुमार ए.आर.	284
34.	कस्बाई ज़िन्दगी के बदलते रूप (*एक कस्बे का नोट्स* : नीलेश रघुवंशी)	शबाना हबीब	291
35.	अंधेरे कोने में कैद लोकतंत्र (*अंधेरा कोना* : उमाशंकर चौधरी)	विष्णु तंकप्पन	294
36.	सीरदारी की तासीर (*मदारीपुर जंक्शन* : बालेन्दु द्विवेदी)	नीरज कुमार द्विवेदी	300

जन विकल्प

आगामी अंक

हिन्दी उपन्यास-3 : 2000-2022

स्त्री कहानी

सामान्य अंक

जन विकल्प

सहयोग राशि

व्यक्तिगत :	साधारण डाक से	: 4 अंक :	600/-
		: 8 अंक :	1200/-
	रजिस्ट्रेड डाक से	: 4 अंक :	700/-
		: 8 अंक :	1400/-
संस्थागत :	साधारण डाक से	: 4 अंक :	700/-
		: 8 अंक :	1400/-
	रजिस्ट्रेड डाक से	: 4 अंक :	800/-
		: 8 अंक :	1500/-

चेक/डिमांड ड्राफ्ट 'VIKALP THRISSUR' के नाम पर हों।
बैंक खाते में भी राशि जमा कर सकते हैं।

State Bank of India (SBI), Patturaikkal Branch, Thrissur, Kerala.
'VIKALP THRISSUR'
Savings A/c No. 67168206980
IFSC Code : SBIN0076604
WhatsApp No. : 9446358534 Google Pay : 85475 68534

राशि जमा करने की सूचना एस.एम.एस. अथवा वाट्सअप द्वारा दें।

संपर्क : VIKALP BHAVAN,
Puthurkkara, Ayyanthole P.O.,
Thrissur-680 003, Kerala.
vikalpthrisur@gmail.com

जनविकल्प **नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा,** नई दिल्ली के पुस्तक केन्द्र में तथा **NotNul.com** में उपलब्ध है।

संपादकीय

यूरोप में उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास राष्ट्र–राज्य के रूपायन के साथ हुआ था। लेकिन भारत की स्थिति उससे पृथक रही। यहाँ नवोत्थान–नवजागरण का आरंभ पश्चिमी शिक्षा एवं संपर्क के साथ बल पकड़ने लगा था। दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन भी बल पकडने लगा था। लेकिन यूरोप यहाँ के लोगों को असभ्य, जीर्ण एवं प्राकृत कह रहा था। इस अंतर्द्वंद्व व संक्रमण के दौरान शिक्षित लोगों के भीतर निजी स्वतंत्र देश की चेतना जागने लगी। इस अस्तित्व संकट के दौरान आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवी इतिहास एवं ऐतिहासिक उपन्यास की रचना करने लगे। जनता को आत्मबल प्रदान करने के लिए निजी इतिहास की अनिवार्यता को वे महसूस करते थे। बंकिमचन्द्र के *आनंद मठ*, *कृष्णा चरित*, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का *गोरा* (बंगला), अप्पु नेटुंगाडी का *कुन्दलता*, चन्दु मेनोन का *इन्दुलेखा* (मलयालम) आदि की इस संदर्भ में याद कर सकते हैं। ये उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए हैं।

यह सर्वविदित है कि उपन्यास समाज जीवन का इतिहास है, साथ ही साथ देश का इतिहास भी। यह सिर्फ इतिहास ही नहीं, बल्कि समाज जीवन का आलोचनात्मक इतिहास है। यह वर्तमान में खड़ा होकर इतिहास–बोध के बल पर विभिन्न तबकों में बंटे समाज, जो देश–भर फैला हुआ है, की छानबीन करता है, उसके संश्लिष्ट यथार्थ को पकड़ने का प्रयास करता है। इस तरह के विचार विश्लेषण के वक्त उपन्यासकार का मस्तिष्क व विवेक भविष्य का स्वप्न भी संजोता नज़र आता है। इतिहासकार स्थल और काल पर ध्यान देने को मज़बूर होता है जबकि उपन्यासकार इस तरह के बंधनों से स्वतंत्र भी है। वह अपने जीवन दर्शन के आधार पर कल्पना के पंख धारण करता है। इस प्रकार वह इतिहास की सीमाओं का उल्लंघन करता है, और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन भी करता है।

आज खंडों में विभक्त बृहत्काय उपन्यास का समय नहीं है, उसे पाठक, प्रकाशक की मांगों पर भी ध्यान देना पड़ता है। दूसरी ओर समाज जीवन जटिल से जटिलतर होते समय में देश या समाज जीवन को लिखना भी मुश्किल है। यदि लिखने का प्रयास करें तो उसकी सफलता पर भी संदेह होगा। पहले प्रेमचन्द ने तत्कालीन देश व समाज को लिखने का सफल प्रयास *गोदान* उपन्सास के द्वारा किया था। *गोदान* में गाँव और किसान हैं, गाँव की समस्याएँ हैं, उन समस्याओं से मुक्ति चाहते लोग हैं, पूँजीवादी–धार्मिक–सामंती शोषकों के खेल हैं, दलित जीवन की समस्याएँ एवं समाधान हैं, बहुमुखी शोषण से मुक्ति चाहती स्त्री है और इन सबके साथ

शहरी जीवन तथा उसकी सभ्यता भी। समकाल के उपन्यासकार इस प्रकार की बहुस्वरता एक कृति में समेटने का प्रयास नहीं करते हैं, एक ही मुद्दे को विभिन्न भागों में रेखांकित करने का प्रयास करते हैं। स्त्री, दलित, बाज़ार, सांप्रदायिकता आदि को लेकर लिखे गये उपन्यास देख सकते हैं। कहने का मतलब यह है कि आज जंगल से लेकर महानगर तक फैले जीवन की समस्याएँ और उसके रूप–रंग में काफी विस्तार आ गया है, साथ ही जन जीवन काफी जटिल भी हो गया है। विश्वपूंजी का हथकंडा हर कहीं है, धर्म अपनी भूमिका से परे वर्चस्व दिखा रहा है, राजनीति एवं प्रशासन इसका पुरजोर सहायता करते नज़र आते हैं। प्रशासन जन सेवक का चोगा उतार कर ताकतवरों के फेसिलिटेटर की भूमिका निभाने लगा है। यह भी सच है कि बाज़ार एवं सुविधा की गिरफ्त में मनुष्य सही–गलत की पहचान करने में असमर्थ हो गया है। जो पहचान करते हैं वे मात्र बुद्बुदाते रहते हैं। इससे समाज व राजनीति पर कोई असर नहीं पड़ता है। शासन विकास, मानवाधिकार, समान अवसर जैसे नारों–वादों की ओट में जनता के साथ आँखमिचौनी का खेल खेलता रहता है। शोषकों को पूरी छूट देकर जनता से कहता है – ग्राहकों जागते रहो। बहुजन हिताय कहते वक्त ही समान मौके की भी बात करता है, याने जिसमें ताकत है, सामर्थ्य है, उसकी जीत होगी। जो दुर्बल है, असहाय है, उपेक्षित है, अशिक्षित है, वे यहाँ जीने योग्य नहीं हैं। उसी ज़बान से आत्मनिर्भर राष्ट्र–राज्य, लोकतंत्र, भारतीय संस्कृति और उसकी नैतिक परंपरा के साथ मानवप्रेम की बातें कर रहा है। इन सबके बीच पिसते सजग मनुष्य त्रासद जीवन की आलोचना उपन्यास में हम देख सकते हैं। नवउपनिवेशन के विभिन्न चेहरे, उजड़ते गाँव, विस्थापन, सांप्रदायिकता आदि मुद्दों के साथ स्त्री, दलित, आदिवासी, पारिस्थितिकी, थेर्ड जेंडर जैसे विषयों पर उपन्यास प्रकाशित होने लगे हैं।

इस अंक में दो हज़ार के बाद लिखे गए ऐसे उपन्यासों पर कई लेख हैं। एक अंक में सभी लेखों की समेटना मुश्किल हो गया है। इसलिए दो हज़ार के बाद प्रकाशित उपन्यासों पर ही एक अंक और निकालने की योजना है। तब लगभग सभी प्रतिनिधि उपन्यासों से पाठक रूबरू हो सकते हैं।

पी. रवि